चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	10.5.22	3	3-4

• खाद्यान उत्पादन में डॉ. रामधन सिंह का अभूतपूर्व योगदान

गेहूं, चावल, जौ और दलहनों की 25 उन्नत किस्में की थीं विकसित

भास्कर न्यूज | हिसार

सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गई वे उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में स्वर्गीय रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया जिनके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

गोविंद बल्भ पंत कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पंत नगर के प्रोफेसर डॉ. जेपी जयसवाल ने बदलती मौसमी परिस्थिति के अंतर्गत गेहूं फसल सुधार रणनीति विषय पर मुख्य संभाषण दिया और देश की गेहूं की मांग की अपूर्ति के लिए तापमान, रोग व कीट प्रकोप जैसे विभिन्न जैविक व अजैविक दबावों के बावजूद अधिक पैदावार देने वाली किस्में विकसित किए जाने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा विश्व के मुकाबले भारत के पास केवल 2 प्रतिशत भूमि है जबकि जनसंख्या का हिस्सा 17.6 प्रतिशत है। इससे पूर्व कृषि कॉलेज के डीन डॉ. एस.के. पाहुजा ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अभूतपूर्व योगदान की जानकारी दी।

एचएयू में आयोजित कार्यक्रम को कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज संबोधित करते हुए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	10.5.22	4	1-5

आयोजन

रामधन सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में हुए कार्यक्रम में किया पुस्तक का विमोचन, एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज बोले-

बासमती 370 किस्म की बदौलत भारत चावल का सबसे बड़ा निर्यातक

माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह को देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें सम्मान के साथ याद किया जाता है।

उनके फसल सुधार कार्यक्रमों के चलते हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में उपलब्धियां हासिल की। उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

पुस्तक का विमोचन करते एचएयू में कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। संवाद

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में स्व. राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि उनके द्वारा तैयार की गई बासमती 370 किस्म की बदौलत आज भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है।

डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूं चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया। उन्होंने कहा कि डॉ. रामधन सिंह को श्रद्धांजलि दी तथा कहा कि वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। इस मौके पर कुलपति ने कीट विज्ञान विभाग के वैज्ञानिकों द्वारा प्रकाशित किए गए दो मैन्युअल का विमोचन किया।

इस अवसर पर गोविंद बल्भ पंत कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पंतनगर के प्रोफेसर डॉ. जे.पी. जयसवाल ने कहा कि देश की गेहूं की मांग की अपूर्ति के लिए तापमान, रोग व कीट प्रकोप जैसे विभिन्न जैविक व अजैविक दबावों के बावजूद अधिक पैदावार देने वाली किस्में विकसित करनी होंगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	10.5.22	8	4-5

कृषि विज्ञान केंद्र का किसान मेला संपन्न

कम लागत में ज्यादा उत्पादन, फसल विविधिकरण से बढ़ेगी आय

लोहारू की अनाज मंडी में सोमवार को किसान मेले में संबोधित करते कुलपति प्रो. बी.आर. कम्बोज। -निस

लोहारू, 9 मई (निस)

चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं गुरू जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बी.आर. कम्बोज ने कहा कि कृषि में वर्तमान संसाधनों का इष्टतम प्रयोग करके कम लागत पर अधिकतम उत्पादन तथा फसलों के विविधिकरण से किसानों की आमदनी बढ़ेगी। इसी से किसान के जीवन में खुशहाली आएगी। फसल अवशेष धरती माता का आवरण हैं जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं। इसलिए फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करना चाहिए ताकि भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहे। मेले में मिट्टी-पानी की जांच के अलावा मौसम संबंधी जानकारी के लिए निःशुल्क पंजीकरण किया गया।

प्रो. कम्बोज सोमवार को लोहारू की अनाज मंडी में कृषि विज्ञान केंद्र भिवानी व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की ओर से आयोजित किसान मेले को संबोधित कर रहे थे। इस मेले का विषय कपास उत्पादन में कृषि क्रियाएं तथा बीटी कपास में गुलाबी सुंडी प्रबंधन था। उन्होंने कहा कि किसानों की खुशहाली के लिए वैज्ञानिक निरंतर मेहनत करते हुए विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों और तकनीकों को विकसित करने में जुटे हुए हैं। किसान की मेहनत, वैज्ञानिकों का ज्ञान व सरकार की सुविधा तीनों को मिलाकर काम करने से किसानों का भला होगा।

उन्होंने कहा कि किसानों को परम्परागत खेती की बजाय फल, फूल ,बागवानी, सब्जी की समन्वित खेती पर ध्यान देना होगा।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि	10.5.22	9	6-8

डॉ. रामधन की जयंती मनाई

■ खाद्यान उत्पादन में डॉ. रामधन सिंह का अभूतपूर्व योगदान : प्रो. काम्बोज

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गई वे उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में स्वर्गीय रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि इस महान वैज्ञानिक ने विभिन्न फसलों की नई किस्में इजाद कर भारत ही नहीं अपितु दुनिया में अलग पहचान बनाई। इस अवसर पर गोविंद बल्भ पंत कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पंतनगर के प्रोफैसर डॉ. जेपी जयसवाल ने बदलती मौसमी परिस्थिति के अंतर्गत गेहूं फसल सुधार रणनीति विषय पर मुख्य संभाषण दिया। इस मौके पर अनुसंधान निदेशक डॉ. जीतराम शर्मा आदि मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार	10.5.22	5	4-8

खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किए जाते हैं स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह : प्रो. काम्बोज

देश में हरित क्रांति के अग्रदूत के रूप में है पहचान

हिसार, 9 मई (विरेंद्र वर्मा): सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गई वे उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में स्वर्गीय रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि इस महान वैज्ञानिक ने विभिन्न फसलों की नई किस्में इजाद कर भारत ही नही अपितु दुनिया में अलग पहचान बनाई। उनके द्वारा तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म की बदौलत आज भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। उन्होंने कहा डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया जिनके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

वैज्ञानिक करें कृषि की ज्वलंत समस्याओं पर अनुसंधान

प्रो. काम्बोज ने डॉ. रामधन सिंह को श्रद्धांजलि दी तथा कहा कि वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और कड़ी मेहनत व लगन के साथ कृषि की ज्वलंत समस्याओं को लेकर अनुसंधान कार्य करते हुए देश को खाद्यान्न तथा पोषण सुरक्षा प्रदान करने में योगदान देना चाहिए। उन्होंने कहा मौसम में निरंतर हो रहा बदलाव कृषि पैदावार के लिए गंभीर चुनौती पैदा कर रहा है। गत मार्च माह में तापमान में वृद्धि होने के कारण गेहूं की हुई कम पैदावार इसका साक्ष्य है। उन्होंने कहा मौसम की हर परिस्थिति व अन्य जैविक और अजैविक दबावों से निपटने के लिए वैज्ञानिकों के स्तर पर फसलों की उपयुक्त किस्मों के साथ-साथ आकसमिक कार्ययोजना तैयार करने की बहुत जरूरत है। इस मौके पर कुलपति ने कीट विज्ञान विभाग के वैज्ञानिकों द्वारा प्रकाशित किए गए दो मैन्युअल का विमोचन किया।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज कार्यक्रम को संबोधित करते हुए।

इस अवसर पर गोविंद बल्भ पंत कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पंतनगर के प्रोफैसर डॉ. जे.पी. जयसवाल ने बदलती मौसमी परिस्थिति के अंतर्गत गेहूं फसल सुधार रणनीति विषय पर मुख्य संभाषण दिया और देश की गेहूं की मांग की अपूर्ति के लिए तापमान, रोग व कीट प्रकोप जैसे विभिन्न जैविक व अजैविक दबावों के बावजूद अधिक पैदावार देने वाली किस्में विकसित किए जाने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा विश्व के मुकाबले भारत के पास केवल 2 प्रतिशत भूमि है जबकि जनसंख्या का हिस्सा 17.6 प्रतिशत है। ऐसे में जैविक व अजैविक दबावों के चलते इतनी अधिक जनसंख्या को खाद्यान्न सुरक्षा देना बहुत बड़ी चुनौती है।

इससे पूर्व कृषि महाविद्यालय के डीन डॉ. एस.के. पाहुजा ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अभूतपूर्व योगदान की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि देशी गेहूं की किस्म सी-306 जिसे खाने में सबसे स्वादिष्ट माना जाता है, के जनक भी डॉ. रामधन सिंह ही थे। उन्होंने कहा उनकी याद और युवा वैज्ञानिकों के प्रेरणा स्त्रोत के रूप में मार्गदर्शन के लिए विश्वविद्यालय में उनके नाम से रामधन सिंह बीज फार्म की स्थापना भी की गई है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जीत राम शर्मा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष सहित विद्यार्थी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	09.05.2022	--	--

डॉ. रामधन सिंह ने गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया : प्रो. काम्बोज

चिराग टाइम्स ब्यूज

हिसार। सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अर्थात गेहूं के पैदावार आकार के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गई थे उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में स्वर्गीय रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि इस महान वैज्ञानिक ने विभिन्न फसलों की नई किस्में इजाद कर भारत ही नहीं अपितु दुनिया में अलग पहचान बनाई। उनके द्वारा तैयार की गई खासमती चावल की 370 किस्म की बदौलत आज भारत खासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। उन्होंने कहा डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया

वीसी बोले, खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किए जाते है स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह

जिनके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

वैज्ञानिक करें कृषि की ज्वलंत समस्याओं पर अनुसंधान

प्रो. काम्बोज ने डॉ. रामधन सिंह को श्रद्धांजलि दी तथा कहा कि वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और कड़ी मेहनत व लगन के साथ कृषि की ज्वलंत समस्याओं को लेकर अनुसंधान कार्य करते हुए देश को खाद्यान तथा पोषण सुरक्षा प्रदान करने में योगदान देना चाहिए।

उन्होंने कहा मौसम में निरंतर हो रहा बदलाव कृषि पैदावार के लिए गंभीर चुनौती पैदा कर रहा है। गत मार्च माह में तापमान में वृद्धि होने के कारण गेहूं की हुई कम पैदावार इसका साक्ष्य है। इस मौके पर कुलपति ने कीट विज्ञान विभाग के वैज्ञानिकों द्वारा प्रकाशित किए गए दो मैनुअल का विमोचन किया।

डॉ. जायसवाल ने ये कहा

इस अवसर पर गोविंद बल्लभ पंत कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पंतनगर के प्रोफेसर डॉ. जे.पी. जायसवाल ने बदलती मौसमी परिस्थिति के अंतर्गत गेहूं फसल सुधार रणनीति विषय पर मुख्य संभाषण दिया और देश की गेहूं की मांग को आपूर्ति के लिए तापमान, रोग व कीट प्रकोप जैसे विभिन्न जैविक व अजैविक दबावों के बावजूद अधिक पैदावार देने वाली किस्में विकसित किए जाने की आवश्यकता जताई।

ये बोले डॉ. पाहुजा

इससे पूर्व कृषि महाविद्यालय के डीन डॉ. एस.के. पाहुजा ने कहा कि देशी गेहूं की किस्म सी-306 जिसे खाने में सबसे स्वादिष्ट माना जाता है, के जनक भी डॉ. रामधन सिंह ही थे। उन्होंने कहा उनकी याद और युवा वैज्ञानिकों के प्रेरणा स्रोत के रूप में मार्गदर्शन के लिए विश्वविद्यालय में उनके नाम से रामधन सिंह बीज फार्म की स्थापना भी की गई है।

डॉ. शर्मा ने धन्यवाद किया

अनुसंधान निदेशक डॉ. बीर राम शर्मा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष सहित विद्यार्थी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	09.05.2022	--	--

खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किए जाते हैं डॉ. रामधन सिंह : कम्बोज

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। कृषि वैज्ञानिक रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गई वे उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। ये विचार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे स्वर्गीय रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे।

प्रो. काम्बोज ने डॉ. रामधन सिंह को श्रद्धांजलि दी तथा कहा कि वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और कड़ी मेहनत व लगन के साथ कृषि की ज्वलंत समस्याओं को लेकर अनुसंधान कार्य करते हुए देश को खाद्यान्न तथा पोषण सुरक्षा प्रदान करने में योगदान देना चाहिए। इससे पूर्व कृषि महाविद्यालय के डीन डॉ. एस.के. पाहुजा ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अभूतपूर्व योगदान की जानकारी दी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नभ छोर	09.05.2022	--	--

खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने वाले डॉ. रामधन सिंह को हकृवि में किया याद

हिसार/ 09 मई/ रिपोर्टर

सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गई वे उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने स्वर्गीय राव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि इस महान वैज्ञानिक ने विभिन्न फसलों की नई किस्में इजाद कर भारत ही नही अपितु दुनिया में अलग पहचान बनाई। उनके द्वारा तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म की

बदौलत आज भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। उन्होंने कहा डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूं, चावल, जौं तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया जिनके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में खाद्यान्न उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। प्रो. काम्बोज ने कहा कि वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और कड़ी मेहनत व लगन के साथ कृषि की ज्वलंत समस्याओं को लेकर अनुसंधान कार्य करते हुए देश को खाद्यान्न तथा पोषण सुरक्षा प्रदान करने में योगदान देना चाहिए। उन्होंने कहा मौसम में निरंतर हो रहा बदलाव कृषि पैदावार के लिए गंभीर चुनौती पैदा कर रहा है। गत मार्च में तापमान में वृद्धि होने के कारण गेंहू की हुई कम पैदावार इसका साक्ष्य है। उन्होंने कहा मौसम की हर परिस्थिति व अन्य जैविक और अजैविक दबावों से निपटने के लिए वैज्ञानिकों के स्तर पर फसलों की उपयुक्त किस्मों के साथ-साथ आकसमिक कार्ययोजना तैयार करने की बहुत जरूरत है। इस मौके पर कुलपति ने कीट विज्ञान विभाग के वैज्ञानिकों द्वारा प्रकाशित किए गए दो मैन्यूअल का विमोचन किया। इस अवसर पर गोविंद बल्भ पंत कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पंतनगर के प्रोफैसर डॉ. जेपी जयसवाल ने बदलती मौसमी परिस्थिति के अंतर्गत गेहूं फसल सुधार रणनीति के तहत देश की गेहूं की मांग की अपूर्ति के लिए तापमान, रोग व कीट प्रकोप जैसे विभिन्न जैविक व अजैविक दबावों के बावजूद अधिक पैदावार देने वाली किस्में विकसित किए जाने की आवश्यकता जताई। उन्होंने कहा विश्व के मुकाबले भारत के पास केवल 2 प्रतिशत भूमि है जबकि जनसंख्या का हिस्सा 17.6 प्रतिशत है। ऐसे में जैविक व अजैविक दबावों के चलते इतनी अधिक जनसंख्या को खाद्यान्न सुरक्षा देना बहुत बड़ी चुनौती है इससे पूर्व कृषि महाविद्यालय के डीन डॉ. एसके पाहुजा ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अभूतपूर्व योगदान की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि देशी गेहूं की किस्म सी-306 जिसे खाने में सबसे स्वादिष्ट माना जाता है, के जनक भी डॉ. रामधन सिंह ही थे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हांसी क्रांति	09.05.2022	--	--

खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान के लिए याद किए जाते हैं स्वर्गीय डॉ. रामधन सिंह- प्रो. बी.आर. काम्बोज

हांसी क्रांति न्यूज

हिसार, : सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह द्वारा देश के खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व योगदान देने के लिए उन्हें आज भी बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। हरियाणा और पंजाब राज्यों में हरित क्रांति अवधि के दौरान अनाज के उत्पादन और उत्पादकता में जो उपलब्धियां प्राप्त की गई वे उनके द्वारा स्थापित फसल सुधार कार्यक्रमों की मजबूत नींव के कारण ही संभव हो सका है। ऐसे महान वैज्ञानिकों और उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में स्वर्गीय रॉव बहादुर डॉ. रामधन सिंह की जयंती के उपलक्ष्य में

आयोजित एक कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि इस महान वैज्ञानिक ने विभिन्न फसलों की नई किस्में इजाद कर भारत ही नहीं अपितु दुनिया में अलग पहचान बनाई। उनके द्वारा तैयार की गई बासमती चावल की 370 किस्म की बदौलत आज भारत बासमती चावल का सबसे बड़ा निर्यातक है। उन्होंने कहा डॉ. रामधन सिंह ने अपने जीवन में गेहूं, चावल, जौ तथा दलहनों की 25 उन्नत किस्मों को विकसित किया जिनके परिणामस्वरूप भारतीय उपमहाद्वीप में खाद्यान उत्पादन में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

वैज्ञानिक करें कृषि की ज्वलंत समस्याओं पर अनुसंधान-प्रो. काम्बोज

ने डॉ. रामधन सिंह को श्रद्धांजलि दी तथा कहा कि वैज्ञानिकों व विद्यार्थियों को उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए और कड़ी मेहनत व लगन के साथ कृषि की ज्वलंत समस्याओं को लेकर अनुसंधान कार्य करते हुए देश को खाद्यान तथा पोषण सुरक्षा प्रदान करने में योगदान देना चाहिए। उन्होंने कहा मौसम में निरंतर हो रहा बदलाव कृषि पैदावार के लिए गंभीर चुनौती पैदा कर रहा है। गत मार्च माह में तापमान में वृद्धि होने के कारण गेहूं की हुई कम पैदावार इसका साक्ष्य है। उन्होंने कहा मौसम की हर परिस्थिति व अन्य जैविक

और अजैविक दबावों से निपटने के लिए वैज्ञानिकों के स्तर पर फसलों की उपयुक्त किस्मों के साथ-साथ आकस्मिक कार्ययोजना तैयार करने की बहुत जरूरत है। इस मौके पर कुलपति ने कीट विज्ञान विभाग के वैज्ञानिकों द्वारा प्रकाशित किए गए दो मैन्युअल का विमोचन किया। इस अवसर पर गोविंद बल्लभ पंत कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पंतनगर के प्रोफैसर डॉ. जे.पी. जयसवाल ने बदलती मौसमी परिस्थिति के अंतर्गत गेहूं फसल सुधार रणनीति विषय पर मुख्य संभाषण दिया और देश की गेहूं की मांग की अपूर्ति के लिए तापमान, रोग व कीट प्रकोप जैसे विभिन्न जैविक व अजैविक दबावों के बावजूद अधिक पैदावार देने वाली किस्में विकसित किए जाने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा विश्व के मुकाबले भारत के पास केवल 2 प्रतिशत भूमि है जबकि जनसंख्या का हिस्सा 17.6 प्रतिशत है। ऐसे में जैविक व अजैविक दबावों के चलते इतनी अधिक जनसंख्या को खाद्यान सुरक्षा देना बहुत बड़ी चुनौती है। इससे पूर्व कृषि महाविद्यालय के डीन डॉ. एस.के. पाहुजा ने डॉ. रामधन सिंह द्वारा कृषि क्षेत्र में दिए गए अभूतपूर्व योगदान की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि देशी गेहूं की किस्म सी-306 जिसे खाने में सबसे स्वादिष्ट माना जाता है, के जनक भी डॉ. रामधन सिंह ही थे। उन्होंने कहा उनकी याद और युवा वैज्ञानिकों के प्रेरणा स्त्रोत के रूप में मार्गदर्शन के लिए विश्वविद्यालय में उनके नाम से रामधन सिंह बौज फार्म की स्थापना भी की गई है। अनुसंधान निदेशक डॉ. जौत राम शर्मा ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष सहित विद्वान मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	09.05.2022	--	--

किसान की समस्या हमारी समस्या, विश्वविद्यालय से जुडकर उठाएं लाभ : प्रो. बीआर काम्बोज

कपास की फसल में न उठानी पड़े किसानों को समस्या, संज्ञान लेते हुए टीम के साथ फील्ड में उतरे एचएयू के कुलपति

चिराग टाइम्स न्यूज

हिसार। किसान की समस्या को अपनी समस्या मानकर विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक लगातार अनुसंधान कार्य कर रहे हैं। उनका एक ही लक्ष्य है कि किसान की मेहनत बेकार न जाए और उसके द्वारा बोई गई फसल सही समय पर अच्छे से तैयार हो ताकि उसकी भरपूर पैदावार मिल सके। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे कृषि विज्ञान केंद्र व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के की ओर से आयोजित किसान गोष्ठी कार्यक्रम को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस संगोष्ठी का विषय कपास उत्पादन में कृषि क्रियाएं तथा बीटी कपास में गुलाबी सुंडी प्रबंधन था। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक निरंतर मेहनत करते हुए विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों और तकनीकों को विकसित करने में जुटे हुए हैं ताकि किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाया जा सके। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे ज्यादा से ज्यादा विश्वविद्यालय व उससे संबंधित कृषि विज्ञान केंद्रों से जुडकर अधिक से अधिक लाभ उठाएं। कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि कपास की फसल में किसानों को समस्याओं का सामना ना करना पड़े इसलिए कपास सीजन की शुरूआत से ही विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों को लगातार फील्ड में उतारा हुआ है और वे किसानों की समस्याओं के समाधान में जुटे हुए हैं। कार्यक्रम में कुलपति को पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया गया।

कृषि वैज्ञानिकों की सलाह व सिफारिशों का रखें विशेष ध्यान : विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने कहा कि कपास हरियाणा प्रदेश की एक महत्वपूर्ण नगदी फसल है। इसलिए किसानों को इस फसल में कृषि वैज्ञानिकों द्वारा समय-समय पर दी जाने वाली सलाह व कीटनाशकों को लेकर की गई सिफारिशों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। डॉ. अनिल यादव, डॉ. ओमेंद्र सांगवान, डॉ. करमल मलिक, डॉ. अनिल जाखड़, डॉ. मनमोहन सिंह ने किसानों को कपास फसल से संबंधित अपने व्याख्यान देकर जागरूक किया। गोष्ठी में प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम भी आयोजित किया गया और मिट्टी-पानी की जांच के अलावा मौसम संबंधी जानकारी के लिए निशुल्क पंजीकरण किया गया।

कार्यक्रम में कृषि विज्ञान केंद्र भिवानी के संयोजक डॉ. उमेश शर्मा, डॉ. रमेश यादव, ज्वाइंट डायरेक्टर कॉटन, डॉ. रामप्रताप सिहाग, डॉ. सुनील ढांडा सहित विश्वविद्यालय के अधिकारी व क्षेत्र के किसान मौजूद रहे। इस दौरान कपास संबंधी आधुनिक तकनीकों व कृषि समस्याओं को लेकर एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
लोक प्रेरणा	10.05.2022	--	--

वर्तमान संसाधनों का इष्टतम प्रयोग करके कम लागत पर अधिकतम उत्पादन तथा फसलों के विविधिकरण से बढ़ेगी किसानों की आय- प्रो. बी.आर. काम्बोज

लोहारू की अनाज मंडी में आयोजित किया गया किसान जागरूकता कार्यक्रम

लोक प्रेरणा लोहारू। चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि कृषि में वर्तमान संसाधनों का इष्टतम प्रयोग करके कम लागत पर अधिकतम उत्पादन तथा फसलों के विविधिकरण से किसानों की आमदनी बढ़ेगी और किसान के जीवन में खुशहाली आएगी। उन्होंने कहा कि फसल अवशेष धरती माता का आवरण है जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते है इसलिए फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करना चाहिए ताकि भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहे। प्रो. काम्बोज सोमवार को लोहारू की अनाज मंडी में किसानों के जागरूकता कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। वे कृषि विज्ञान केंद्र भिवानी व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की ओर से लोहारू में आयोजित किसान मेले को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस मेले का विषय कपास उत्पादन में कृषि क्रियाएं तथा बीटी कपास में गुलाबी सुंडी प्रबंधन था। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक निरंतर मेहनत करते हुए विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों और तकनीकों को विकसित करने में जुटे हुए हैं ताकि किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाया जा सके। उन्होंने कहा कि किसान की मेहनत, वैज्ञानिकों का ज्ञान व

सरकार की सुविधा तीनों को मिलाकर काम करने से किसानों का भला होगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश के कृषि मंत्री जेपी दलाल के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों की टीमें लगातार कपास उत्पादित क्षेत्रों में किसानों को जागरूक करने के लिए समय-समय पर जागरूकता शिविरों का आयोजन कर किसानों को जागरूक कर रही हैं।उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय हर समय किसानों की सेवा के लिए तैयार है और किसानों को विश्वविद्यालय से जुड़कर आधुनिक तकनीकों व उन्नत किस्मों की जानकारी लेनी चाहिए। साथ ही यहां दिए जाने वाले प्रशिक्षण हासिल कर अपने उत्पादों का मूल्य संवर्धन कर सकते हैं और अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं। इसके लिए विश्वविद्यालय लगातार किसानों के हित के लिए इस तरह के प्रशिक्षण प्रदान करता रहता है। युवा व किसान चुनौतियों में अवसर खोजकर समाज में बदलाव ला सकते हैं। साथ ही किसान को वैज्ञानिक सलाह, किसान की मेहनत व सरकार की सुविधाओं का भरपूर फायदा उठाना चाहिए तभी जाकर उसे सफलता हासिल हो सकती है।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण लोहारू	10.05.2022	--	--

किसान मेला

लोहारू अनाज मंडी में आयोजित किसान मेले में पहुंचे एचएयू के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज

फसलों के विविधीकरण से बढ़ेगी किसानों की आमदनी

संवाद न्यूज एजेंसी

लोहारू। चौधरी चरणसिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बी.आर. कंबोज ने कहा कि कृषि में वर्तमान संसाधनों का अधिकतम प्रयोग करके कम लागत पर अधिकतम उत्पादन और फसलों के विविधीकरण से किसानों की आमदनी बढ़ेगी। किसान के जीवन में खुशहाली आएगी।

उन्होंने कहा कि फसल अवशेष धरती माता का आवरण हैं, जो कि भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं। इसलिए फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करना चाहिए, ताकि भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहे। वे सोमवार को लोहारू अनाज मंडी में आयोजित किसान मेले में किसानों को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। कपास उत्पादन में कृषि क्रियाएं और बीटी कपास में गुलाबी सुंडी प्रबंधन विषय पर आयोजित किसान मेले के दौरान बागवानी और प्रगतिशील किसानों द्वारा स्टॉल लगाकर किसानों को बागवानी फसलों के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि किसान की मेहनत, वैज्ञानिकों का ज्ञान व सरकार की सुविधा तीनों को मिलाकर काम करने से किसानों का भला होगा।

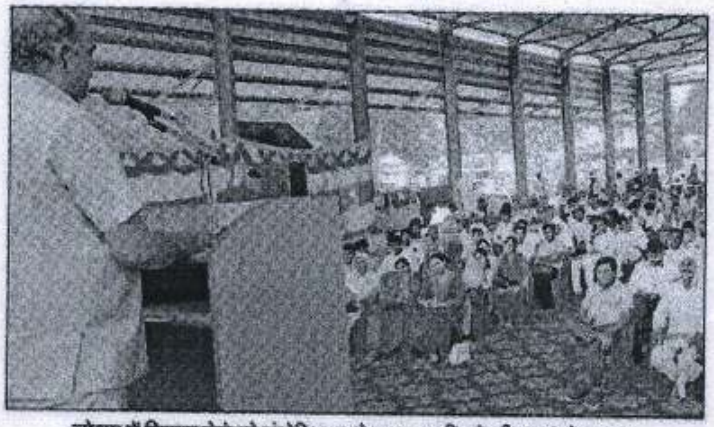

लोहारु में किसान मेले को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. बीआर कंबोज। संवाद

फसल अवशेष धरती का आवरण हैं, जो बढ़ाते हैं भूमि की उर्वरा शक्ति

उन्होंने किसानों को परंपरागत खेती की बजाय फल, फूल ,बागवानी, सब्जी की समन्वित खेती करने के लिए प्रेरित किया। कृषि विभाग के उपनिदेशक डॉ. आत्माराम गोदारा, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह, डॉ. अमेंद्र सांगवान, डॉ. करमल मलिक, डॉ. अनिल जाखड़, डॉ. मनमोहन सिंह, कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ संयोजक डॉ. उमेश शर्मा आदि ने विभिन्न फसलों की जानकारी दी। इस मौके पर चेयरमैन दौलतराम सोलंकी, कमल सैनी, एडवोकेट संजय नेहरा, रामदत्त पहाड़ी, बंटी तायल, महेश गांधी, रोहतास लांबा, बलवंत गोठड़ा और बिल्लू बीडीसी मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण भिवानी	10.05.2022	--	--

वर्तमान संसाधनों का अधिकतम प्रयोग से बढ़ेगी आय: कंबोज

संवाद सहयोगी, लोहारू : चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं गुरु जंभेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बीआर कंबोज ने कहा कि कृषि में वर्तमान संसाधनों का अधिकतम प्रयोग करके कम लागत पर अधिकतम उत्पादन तथा फसलों के विविधिकरण से किसानों की आमदनी बढ़ेगी। इसी से किसान के जीवन में खुशहाली आएगी। फसल अवशेष धरती माता का आवरण हैं जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते है। इसलिए फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करना चाहिए ताकि भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहे। मेले में मिट्टी-पानी की जांच के अलावा मौसम संबंधी जानकारी के लिए निशुल्क पंजीकरण किया गया।

प्रो. कंबोज सोमवार को लोहारू की अनाज मंडी में कृषि विज्ञान केंद्र भिवानी व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की ओर से आयोजित किसान मेले को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस मेले का विषय कपास उत्पादन में कृषि क्रियाएं तथा बीटी कपास में गुलाबी सुंडी प्रबंधन था।

किसान मेले मे कपास की फसल के बारे में कृषि वैज्ञानिको से जानकारी लेते कुलपति। • विज्ञप्ति।

उन्होंने कहा कि किसानों की खुशहाली के लिए वैज्ञानिक निरंतर मेहनत करते हुए विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों और तकनीकों को विकसित करने में जुटे हुए हैं। किसान की मेहनत, वैज्ञानिकों का ज्ञान व सरकार की सुविधा तीनों को मिलाकर काम करने से किसानों का भला होगा। प्रदेश के कृषि मंत्री जेपी दलाल के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों की टीमें लगातार कपास उत्पादित क्षेत्रों में किसानों को जागरूक करने के लिए जागरूकता शिविरों का आयोजन कर किसानों को जागरूक कर रही हैं।

कृषि विभाग के उप निदेशक डा. आत्माराम गोदरा ने किसानों को मेरी फसल मेरा ब्योरा पोर्टल पर फसल का पंजीकरण करवाने को कहा। विस्तार शिक्षा निदेशक डा. बलवान सिंह मंढाल ने फील्ड में जुटे कृषि वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे किसानों के साथ मिलकर उनकी समस्याओं के समाधान के लिए जुटे रहें।

मेले में डा. ओमेंद्र सांगवान, डा. कमल मलिक, डा. अनिल जाखड़, डा. मनमोहन सिंह, डा. उमेश शर्मा, डा. मुरारी लाल, डा. गुलाब, डा. मीनू, डा. योगिता, डा. ममता फोगाट, डा. रामकुमार, डा. रमेश यादव आदि ने कपास व मूंग आदि की फसल में उत्पादन बढ़ाने तथा बीमारियों की रोकथाम के लिए किसानों को जानकारी दी। कार्यक्रम में संयुक्त निदेशक डा. रामप्रताप सिहाग, डा. सुनील दांडा, डीएचओ डा. देवीलाल, एसडीएओ ईश्वर सिंह, इफको के वरिष्ठ प्रबंधक कृष्ण कुमार राणा, चेयरमैन दौलत राम सोलंकी, एडवोकेट संजय नेहरा, रामदत्त पहाड़ी, बंटी तायल, रोहतास लांबा आदि अनेक लोग मौजूद थे।

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा की आवाज	10.05.2022	--	--

कृषि मंत्री जेपी दलाल के निर्देश पर लोहारू की अनाज मंडी में आयोजित किया किसान जागरूकता कार्यक्रम

एचएयू के वीसी प्रोफेसर बीआर कंबोज ने किसान जागरूकता कार्यक्रम को किया संबोधित

लोहारू(एचकेए ब्यूरो)। चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि कृषि में वर्तमान संसाधनों का इस्तेमाल प्रयोग करके कम लागत पर अधिकतम उत्पादन तथा फसलों के विविधिकरण से किसानों की आमदनी बढ़ेगी और किसान के जीवन में खुशहाली आएगी। उन्होंने कहा कि फसल अवशेष धरती माता का आवरण है जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते है इसलिए फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करना चाहिए ताकि भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहे।

प्रो. काम्बोज सोमवार को लोहारू की अनाज मंडी में किसानों के जागरूकता कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। वे कृषि विज्ञान केंद्र भिवानी व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की ओर से लोहारू में आयोजित किसान मेले को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस मेले का विषय कपास उत्पादन में कृषि क्रियाएं तथा बीटी कपास में गुलाबी सुंडी प्रबंधन था। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक निरंतर मेहनत करते हुए विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों और तकनीकों को विकसित करने में जुटे हुए हैं ताकि किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाया जा सके।

उन्होंने कहा कि किसान की मेहनत, वैज्ञानिकों का ज्ञान व सरकार की सुविधा तीनों को मिलाकर काम करने से किसानों का भला होगा।उन्होंने कहा कि प्रदेश के कृषि मंत्री जेपी दलाल के

निर्देशानुसार वैज्ञानिकों की टीमें लगातार कपास उत्पादित क्षेत्रों में किसानों को जागरूक करने के लिए समय-समय पर जागरूकता शिविरों का आयोजन कर किसानों को जागरूक कर रही है।उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय हर समय किसानों की सेवा के लिए तैयार है और किसानों को विश्वविद्यालय से जुड़कर आधुनिक तकनीकों व उन्नत किस्मों की जानकारी लेनी चाहिए। साथ ही यहां दिए जाने वाले प्रशिक्षण हासिल कर अपने उत्पादों का मूल्य संवर्धन कर सकते हैं और अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं। इसके लिए विश्वविद्यालय लगातार किसानों के हित के लिए इस तरह के प्रशिक्षण प्रदान करता रहता है। युवा व किसान चुनौतियों में अवसर खोजकर समाज में बदलाव ला सकते है। साथ ही किसान को वैज्ञानिक सलाह, किसान की मेहनत व सरकार की सुविधाओं का भरपूर फायदा उठाना चाहिए तभी जाकर उसे सफलता हासिल हो सकती है। उन्होंने कहा कि प्रदेश व केंद्र सरकार किसानों के हित के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं लागू कर रही है ताकि किसानों का अधिक से अधिक फायदा हो सके। इसके अलावा किसानों को भी अपनी फसलों से अधिक उत्पादन हासिल करने के लिए परम्परागत खेती की बजाय फल, फूल ,बागवानी, सब्जी आदि की समन्वित खेती पर ध्यान देना होगा। फसल विविधिकरण को अपनाना आज के समय की मांग है जिससे न केवल आमदनी बढ़ेगी बल्कि पर्यावरण संरक्षण भी होगा। कुलपति ने कहा कि किसानों को सरकार की योजनाओं का फायदा उठाकर सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली प्रणाली को अपनाना चाहिए जिससे पानी की भी बचत होगी और उत्पादन भी बढ़ेगा।उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की टीमें इस बार लगातार किसानों के फील्ड में जाकर कपास व अन्य फसलों की समस्याओं के समाधान को लेकर किसानों को जागरूक कर रही हैं।

इस दौरान कृषि विभाग के उप निदेशक डॉ. आत्माराम गोदारा ने कृषि विभाग की योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने किसानों को मेरी फसल मेरा ब्योरा पोर्टल पर फसल का पंजीकरण करवाने को कहा ताकि सरकार की योजनाओं का लाभ मिल सके।

किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए लगातार फील्ड में हैं वैज्ञानिक

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ.बलवान सिंह मंडल ने कृषि वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे किसानों के साथ मिलकर समय-समय पर उनकी समस्या के निदान के लिए जुटे रहें। किसानों को कृषि वैज्ञानिकों द्वारा समय-समय पर दी जाने वाली सलाह व कीटनाशकों को लेकर की गई सिफारिशों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। मेले में डॉ. ओमेंद्र सांगवान, डॉ. करमल मलिक, डॉ. अनिल जाखड़, डॉ. मनमोहन सिंह, कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ संयोजक डॉ. उमेश शर्मा, डॉ. मुरारी लाल, डॉ. गुलाब, डॉ मीनू, डॉ योगिता, डॉ ममता फोगाट, डॉ रामकुमार , डॉ रमेश यादव आदि ने कपास व मूंग आदि की फसल में उत्पादन बढ़ाने तथा बीमारियों की रोकथाम के लिए किसानों को जानकारी दी । कार्यक्रम में कुलपति महोदय को पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया गया।

किसान मेले में लकी ड्रा भी निकाले गए और मिट्टी-पानी की जांच के अलावा मौसम संबंधी जानकारी के लिए निःशुल्क पंजीकरण किया गया। इस दौरान कपास संबंधी आधुनिक तकनीकों व कृषि समस्याओं को लेकर एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में संयुक्त निदेशक डॉ. रामप्रताप सिहाग, डॉ. सुनील ढांडा, डीएओ डॉ देवीलाल,एसडीओ एओ ईश्वर सिंह, इफको के वरिष्ठ प्रबंधक कृष्ण कुमार राणा सहित विश्वविद्यालय के अधिकारी व चेयरमैन दौलत राम सोलंकी,कमल सैनी,महेश गांधी, एडवोकेट संजय नेहरा ,रामदत्त पहाड़ी, बंटी खन्ना, रोहताश लांबा, बलवंत जांगड़ा,विजेंदर गोठड़ा,बलवंत गोठड़ा, बिल्लू बीडीसी,राजेंद्र पहाड़ी सहित क्षेत्र के अनेक किसान मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर लोहारू	10.05.2022	--	--

लोहारू में कृषि विज्ञान केंद्र का किसान मेला हुआ संपन्न

भास्कर न्यूज | लोहारू

चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं गुरू जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने कहा कि कृषि में वर्तमान संसाधनों का इष्टतम प्रयोग करके कम लागत पर अधिकतम उत्पादन तथा फसलों के विविधिकरण से किसानों की आमदनी बढ़ेगी। इसी से किसान के जीवन में खुशहाली आएगी। फसल अवशेष धरती माता का आवरण हैं जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं। इसलिए फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करना चाहिए ताकि भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहे।

प्रो. कम्बोज सोमवार को अनाज मंडी में किसान मेले को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस मेले का विषय कपास उत्पादन में कृषि क्रियाएं तथा बीटी कपास में गुलाबी सुंडी प्रबंधन था। उन्होंने कहा कि किसानों की खुशहाली के लिए वैज्ञानिक निरंतर मेहनत करते हुए विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों और तकनीकों को विकसित करने में जुटे हुए हैं। किसान की मेहनत, वैज्ञानिकों का ज्ञान व सरकार की सुविधा तीनों को मिलाकर काम करने से किसानों का भला होगा।

समस्याओं को लेकर फील्ड में हैं वैज्ञानिक

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने फील्ड में जुटे कृषि वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे किसानों के साथ मिलकर उनकी समस्याओं के समाधान के लिए जुटे रहें। किसानों को कृषि वैज्ञानिकों द्वारा समय-समय पर दी जाने वाली सलाह व कीटनाशकों को लेकर की गई सिफारिशों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। मेले में डा. ओमेंद्र सांगवान, डॉ. कमल मलिक, डॉ. अनिल जाखड़, डॉ. मनमोहन सिंह, डॉ. उमेश शर्मा व डा. रमेश यादव आदि ने कपास व मूंग आदि की फसल में उत्पादन बढ़ाने तथा बीमारियों की रोकथाम के लिए किसानों को जानकारी दी। मेले में लकी ड्रा भी निकाले गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि भूमि लोहारू	10.05.2022	--	--

किसान खेती में वर्तमान संसाधनों के प्रयोग कर अधिक लाभ उठाएं

- कृषि मंत्री के निर्देश पर लोहारू अनाजमंडी में किसान मेला आयोजित
- एचएयू के वीसी ने दिए किसानों को आवश्यक टिप्स

हरिभूमि न्यूज ›› लोहारू

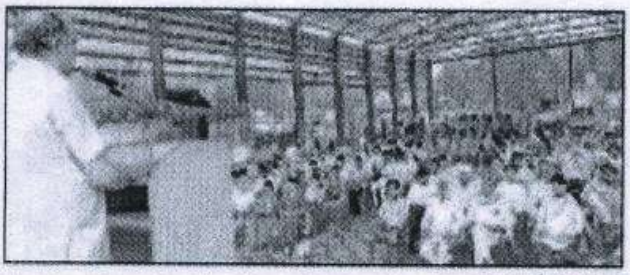

लोहारू। लोहारू में किसान मेले को संबोधित करते हुए कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज।

चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बी.आर. कम्बोज ने कहा कि कृषि में वर्तमान संसाधनों का इष्टतम प्रयोग करके कम लागत पर अधिकतम उत्पादन तथा फसलों के विविधिकरण से किसानों की आमदनी बढ़ेगी और किसान के जीवन में खुशहाली आएगी। उन्होंने कहा कि फसल अवशेष धरती माता का आवरण है जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते है इसलिए फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करना चाहिए ताकि भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहे। वे सोमवार को लोहारू अनाजमंडी में कृषि मंत्री जेपी दलाल के निर्देश पर आयोजित किसान मेले में किसानों को बतौर मुख्यअतिथि संबोधित कर रहे थे।

कपास उत्पादन में कृषि क्रियाएं तथा बीटी कपास में गुलाबी सुंडी प्रबंधन विषय पर आयोजित इस किसान मेले के दौरान बागवानी और प्रगतिशील किसानों द्वारा स्टॉल लगाकर किसानों को बागवानी फसलों के लिए प्रेरित किया गया। उन्होंने कहा कि किसान की मेहनत, वैज्ञानिकों का ज्ञान व सरकार की सुविधा तीनों को मिलाकर काम करने से किसानों का भला होगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश के कृषि मंत्री जेपी दलाल के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों की टीमें लगातार कपास उत्पादित क्षेत्रों में किसानों को जागरूक करने के लिए समय-समय पर जागरूकता शिविरों का आयोजन कर किसानों को जागरूक कर रही है। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय हर समय किसानों की सेवा के लिए तैयार है और किसानों को विश्वविद्यालय से जुड़कर आधुनिक तकनीकों व उन्नत किस्मों की जानकारी लेनी चाहिए। उन्होंने किसानों को परम्परागत खेती की बजाय फल, फूल, बागवानी, सब्जी आदि की समन्वित खेती करने के लिए प्रेरित किया। कृषि विभाग के उप निदेशक डॉ. आत्माराम गोदारा, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह, डॉ. ओमेंद्र सांगवान, डॉ. करमल मलिक, डॉ. अनिल जाखड़, डॉ. मनमोहन सिंह, कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ संयोजक डॉ. उमेश शर्मा आदि ने विभिन्न फसलों की जानकारी दी। इस मौके पर चेयरमैन दौलतराम सोलंकी, कमल सैनी, एडवोकेट संजय नेहरा, रामदत्त पहाड़ी, बंटी तायल, मनोज सांघी, शेहदाम लांबा, बलवंत घेघड़ा, बिल्लू बीडीसी सहित क्षेत्र के अनेक किसान मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
धरणा वारिका	10.05.2022	--	--

फसलों के विविधिकरण से बढ़ेगी किसानों की आय : प्रो. कंबोज

एच.ए.यू. के वी.सी. प्रोफेसर बी.आर. कंबोज ने किसान जागरूकता कार्यक्रम को किया सम्बोधित

लोहारू, 9 मई (प्रदीप): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बी.आर. कम्बोज ने कहा कि कृषि में वर्तमान संसाधनों का इष्टतम प्रयोग करके कम लागत पर अधिकतम उत्पादन तथा फसलों के विविधिकरण से किसानों की आमदनी बढ़ेगी और किसानों के जीवन में खुशहाली आएगी। उन्होंने कहा कि फसल अवशेष धरती माता का आवरण हैं जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं इसलिए फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करना चाहिए ताकि भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहे।

प्रो. कम्बोज सोमवार को कृषि विज्ञान केंद्र भिवानी व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की ओर से लोहारू में आयोजित किसान मेले को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस मेले का विषय कपास उत्पादन में कृषि क्रियाएं तथा बी.टी. कपास में गुलाबी सुंडी प्रबंधन था। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक निरंतर मेहनत करते हुए विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों और तकनीकों को विकसित करने में जुटे हुए हैं ताकि किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाया जा सके।

उन्होंने कहा कि किसान की मेहनत, वैज्ञानिकों का ज्ञान व सरकार की सुविधा तीनों को मिलाकर काम करने से किसानों का भला होगा। कुलपति ने कहा कि किसानों को सरकार की योजनाओं का फायदा उठाकर सूक्ष्म सिंचाई प्रमाण प्रणाली को अपनाना चाहिए जिससे पानी की भी बचत होगी और उत्पादन भी बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की टीमें इस बार लगातार किसानों के फील्ड में जाकर कपास व अन्य फसलों की समस्याओं के समाधान को हेतु किसानों को जागरूक कर रही हैं।

आयोजित प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए कुलपति प्रो. बी.आर. कम्बोज।

इस दौरान कृषि विभाग के उप निदेशक डा. आत्माराम गोदारा ने कृषि विभाग की योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम में कुलपति को पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर कपास संबंधी आधुनिक तकनीकों व कृषि समस्याओं को लेकर एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	10.05.2022	--	--

वर्तमान संसाधनों का इष्टतम प्रयोग करके कम लागत पर अधिकतम उत्पादन तथा फसलों के विविधिकरण से बढ़ेगी किसानों की आय : प्रो. बी.आर. काम्बोज

रोहतक, 9 मई (अमित खतिया) : चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि कृषि में वर्तमान संसाधनों का इष्टतम प्रयोग करके कम लागत पर अधिकतम उत्पादन तथा फसलों के विविधिकरण से किसानों की आमदनी बढ़ेगी और किसान के जीवन में खुशहाली आएगी। उन्होंने कहा कि फसल अवशेष धरती माता का आभूषण हैं जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं इसलिए फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करना चाहिए ताकि भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहे। प्रो. काम्बोज सोमवार

को रोहतक की अनाज मंडी में किसानों के जागरूकता कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। वे कृषि विज्ञान केंद्र भिवानी व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की ओर से रोहतक में आयोजित किसान मेले को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे।

इस मेले का विषय कपास उत्पादन में कृषि विचार तथा चोटी कपास में गुलाबी सुंडी प्रबंधन था। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक निरंतर मेहनत करते हुए विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों और तकनीकों को विकसित करने में जुटे हुए हैं ताकि किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाया जा सके। उन्होंने कहा कि किसान की मेहनत, वैज्ञानिकों का ज्ञान व सरकार की सुविधा तीनों को मिलाकर काम करने से किसानों का भला होगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश के कृषि मंत्री जेपी दलाल के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों की टीमें लगातार कपास उत्पादक क्षेत्रों में किसानों को जागरूक करने के लिए समय-समय पर जागरूकता शिविरों का आयोजन कर किसानों को जागरूक कर रही हैं उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय हर समय किसानों की सेवा के लिए तैयार है और किसानों को विश्वविद्यालय से जुड़कर आधुनिक तकनीकों व उन्नत किस्मों की जानकारी लेनी चाहिए। साथ ही यहां दिए जाने वाले प्रशिक्षण हासिल कर अपने उत्पादों का मूल्य संवर्धन कर सकते हैं और अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं। इसके लिए विश्वविद्यालय लगातार किसानों के हित के लिए इस तरह के प्रशिक्षण प्रदान करता रहता है। युवा व किसान चुनौतियों में अवसर खोजकर समाज में बदलाव ला सकते हैं। साथ ही किसान को वैज्ञानिक सलाह, किसान की मेहनत व सरकार की सुविधाओं का भरपूर फायदा उठाना चाहिए तभी जाकर उसे सफलता हासिल हो सकती है। उन्होंने कहा कि प्रदेश व केंद्र सरकार किसानों के हित के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाएं लागू कर रही हैं ताकि किसानों को अधिक से अधिक फायदा हो सके। इसके अलावा किसानों को भी अपनी फसलों में अधिक उत्पादन हासिल करने के लिए परम्परागत खेती की जगह फल, फूल, बागवानी, सब्जी आदि की समन्वित खेती पर ध्यान देना होगा। फसल विविधिकरण को अपनाना आज के समय की मांग है जिससे न केवल आमदनी बढ़ेगी बल्कि पर्यावरण संरक्षण भी होगा। कुलपति ने कहा कि किसानों को सरकार की योजनाओं का फायदा उठाकर सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली को अपनाना चाहिए जिससे पानी की भी बचत होगी और उत्पादन भी बढ़ेगा उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की टीमें इस बार लगातार किसानों के खेतों में जाकर कपास व अन्य फसलों की समस्याओं के समाधान को लेकर किसानों को जागरूक कर रही हैं। इस दौरान कृषि विभाग के उप निदेशक डॉ. आत्माराम गोदारा ने कृषि विभाग की योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने किसानों को मेरी फसल मेरा ब्योरा पोर्टल पर फसल का पंजीकरण करवाने को कहा ताकि सरकार की योजनाओं का लाभ मिल सके।

किसानों की समस्याओं के समाधान के लिए लगातार फील्ड में हैं वैज्ञानिक

विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने कृषि वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे किसानों के साथ मिलकर समय-समय पर उनकी समस्या के निदान के लिए जुटे रहें। किसानों को कृषि वैज्ञानिकों द्वारा समय-समय पर दी जाने वाली सलाह व कीटनाशकों को लेकर की गई सिफारिशों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। डॉ. ओमेंद्र सांगवान, डॉ. करमल मलिक, डॉ. अनिल यादव, डॉ. मनमोहन सिंह, कृषि विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ संयोजक डॉ. उमेश शर्मा, डॉ. मुरारी लाल, डॉ. गुलाब, डॉ. सीनू, डॉ मोनिका, डॉ ममता फोगाट, डॉ राजकुमार, डॉ रमेश यादव आदि ने कपास व मूंग आदि की फसल में उत्पादन बढ़ाने तथा बीमारियों की रोकथाम के लिए किसानों को जानकारी दी। कार्यक्रम में कुलपति महोदय को पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया गया। किसान मेले में लक्की ड्रा भी निकाले गए और मिट्टी-पानी की जांच के अलावा मौसम संबंधी जानकारी के लिए निःशुल्क पंजीकरण किया गया। इस दौरान कपास संबंधी आधुनिक तकनीकों व कृषि समस्याओं को लेकर एक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में संयुक्त निदेशक डॉ. रामप्रताप सिहाग, डॉ. सुनील ढांडा, एसडीओ ईश्वर सिंह, इफको के वरिष्ठ प्रबंधक कृष्ण कुमार राव सहित विश्वविद्यालय के अधिकारी व क्षेत्र के अनेक किसान मौजूद रहे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	10.05.2022	--	--

वर्तमान संसाधनों का इष्टतम प्रयोग करके कम लागत पर अधिकतम उत्पादन तथा फसलों के विविधिकरण से बढ़ेगी किसानों की आय: प्रो. बी.आर. काम्बोज

लोहारू की अनाज मंडी में आयोजित किया गया किसान जागरूकता कार्यक्रम

अमित वालिया लोहारू। चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय एवं गुरू जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि कृषि में वर्तमान संसाधनों का इष्टतम प्रयोग करके कम लागत पर अधिकतम उत्पादन तथा फसलों के विविधिकरण से किसानों की आमदनी बढ़ेगी और किसान के जीवन में खुशहाली आएगी। उन्होंने कहा कि फसल अवशेष धरती माता का आवरण हैं जो भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं इसलिए फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करना चाहिए ताकि भूमि की उर्वरा शक्ति बनी रहे।

प्रो. काम्बोज सोमवार को लोहारू की अनाज मंडी में किसानों के जागरूकता कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। वे कृषि विज्ञान केंद्र भिवानी व कृषि एवं किसान कल्याण विभाग की ओर से लोहारू

में आयोजित किसान मेले को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। इस मेले का विषय कपास उत्पादन में कृषि क्रियाएं तथा बीटी कपास में गुलाबी सुंडी प्रबंधन था। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक निरंतर मेहनत करते हुए विभिन्न फसलों की उन्नत किस्मों और तकनीकों को विकसित करने में जुटे हुए हैं ताकि किसानों को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाया जा सके। उन्होंने कहा कि किसान की मेहनत, वैज्ञानिकों का ज्ञान व सरकार की सुविधा तीनों को मिलाकर काम करने से किसानों का भला होगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश के कृषि मंत्री जेपी दलाल के निर्देशानुसार वैज्ञानिकों की टीमें लगातार कपास उत्पादित क्षेत्रों में किसानों को जागरूक करने के लिए समय-समय पर जागरूकता शिविरों का आयोजन कर किसानों को जागरूक कर रही हैं।उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय हर समय किसानों की सेवा के लिए तैयार है और किसानों को विश्वविद्यालय से जुडकर आधुनिक तकनीकों व उन्नत किस्मों की जानकारी लेनी चाहिए। साथ ही यहां दिए जाने वाले प्रशिक्षण हासिल कर अपने उत्पादों का मूल्य संवर्धन कर सकते हैं और अपनी आय में बढ़ोतरी कर सकते हैं। इसके लिए विश्वविद्यालय लगातार किसानों के हित के लिए इस तरह के प्रशिक्षण प्रदान करता रहता है। युवा व किसान चुनौतियों में अवसर खोजकर समाज में बदलाव ला सकते हैं। साथ ही किसान को वैज्ञानिक सलाह, किसान की मेहनत व सरकार की सुविधाओं का भरपूर फायदा उठाना चाहिए तभी जाकर उसे सफलता हासिल हो सकती है।